ए.पी.एस.एम.कॉलेज,बरौनी
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

- हिन्दी विभाग, स्नातक प्रथम वर्ष(प्रथम पत्र)
- सत्र-2020-2023,
- रीतिकाल
- डॉ मेनका कुमारी

रीतिकाल का सामान्य परिचय

- रीतिकाल का समय भक्तिकाल के बाद आता है| इसका समय मोटे तौर पर 1700 ई. से 1850 ई. तक माना जाता है| इस काल में कविता लेखन के लिए एक विशेष ‘तरीका’ अपनाया जाने लगा था|

- रीतिकाल में एक विशेष प्रणाली, तरीके से या रीति से कविताएं लिखी जाने लगीं।इस काल में काव्यांग निरूपण, को कविता का विषय बना लिया गया। इस काल की कविताएं प्रधानतः शृंगार रस की हैं। यद्यपि वीर रस और नीति संबंधी कविताएं भी लिखी गईं।

- रीति साहित्य के विकास के अनेक कारण हैं| एक कारण तो संस्कृत में इसकी विशाल परम्परा है| जिस समय भाषा- साहित्य का प्रारभ हुआ उस समय भी संस्कृत में लक्षण या अलंकार-साहित्य की रचना चल रही थी| यहाँ तक कि शाहजहाँ के समय में ही तो पंडितराज जगन्नाथ का अलंकार शास्त्र पर वृहद ग्रन्थ ‘रसगंगाधर’ लिखा गया| इस समय तक केशवदास की ‘कविप्रिया’, ‘रसिकप्रिया’ और कृपाराम की ‘हिततरंगिणी’, नंददास की ‘रसमंजरी’ आदि लिखे जा चुके थे

दूसरा कारण लोक- भाषा के कवियों को प्राप्त राज्याश्रय है| अकबर के समय हिन्दी भाषा के कवियों को दरबार में आश्रय प्राप्त हुआ और हिन्दी को प्रोत्साहन मिला| हिन्दी भाषा के कवियों की राज्याश्रय की परम्परा अकबर के समय से पड़ी और उसकी देखा-देखी, राजपुताना तथा मध्य-भारत की रियासतों-ओरछा, जयपुर, बूंदी आदि में हिन्दी भाषा के कवियों को राज्याश्रय प्राप्त हुआ|

हिन्दी रीति-साहित्य के विकास का तीसरा कारण सामने है- कवि और काव्य के स्वतंत्र रूप की प्रतिष्ठा| सम्मानपूर्ण राज्याश्रय से कवियों के मन में स्वतंत्र ऐहिक साहित्य की सृष्टि का भाव जाग्रत हुआ|

- इस समय के राजतंत्र में सम्राट या बादशाह सर्वेसर्वा था| ऐसी स्थिति में एक व्यक्ति को ही प्रसन्न करके काम संभव था| जिस प्रकार उस सामंती दौर में भेंट आदि के द्वारा प्रसन्न करने की प्रथा थी, उसी प्रकार आलंकारिक विशेषता, उक्ति-वैचित्र्य, नायिका के सौंदर्य, स्वभाव-चित्रण, शब्द चमत्कार, विलास-वैभव आदि के वर्णन आदि द्वारा साहित्य के क्षेत्र में भी प्रभाव डालने का कार्य प्रारभ हुआ|

राजनीतिक उथल-पुथल और सता एवं वैभव की क्षणभंगुरता ने जीवन के प्रति दो अतिरेकपूर्ण दृष्टिकोण विकसित किया| एक ने जीवन के प्रति पूर्ण विरक्ति और त्याग का भाव जाग्रत किया, जबकि दूसरे ने पूर्ण भोग का दृष्टिकोण|

शाही दरबार सुख, समृद्धि एवं शिष्टता का केंद्र था, परन्तु उसके बाहर देश के अन्य स्थानों में जीवन दुर्दशाग्रस्त, असंतोषजनक, अतिदयनीय एवं घोर विपत्तिजनक था| अमीर और सामंत अत्यंत विलासपूर्ण जीवन व्यतीत करते थे| उनको हर प्रकार की सुविधाएं और अधिकार प्राप्त थे, अतः ये आमोद-प्रमोद में अपना जीवन व्यतीत करते थे| अपने धन और साधनों का उपयोग विलासिता, असंयम, शान-शौकत और ठाठ-बाट में करते थे| उनकी विलासिता की भावना दुर्दमनीय थी|

- इन अमीर और सामंतों के खान-पान, वश-भूषा आदि भी विलासिता और सजावट से ओत-प्रोत थे| कामदार, छपे रेशम और मखमली वस्त्रों का पहनावा औरे विविध सुस्वादु व्यंजनों से युक्त भोजन इन अमीरों का साधारण रहन-सहन था| मुस्लिम अमीरों की देखा-देखी हिन्दू-सामंतों में भी इसी जीवन के अंधानुकरण की लहर फ़ैल गयी थी|

- पद्माकर का कवित्त उपर्युक्त ऐतिहासिक विवरण मेल खाता है-

गुलगुली गिल मैं गलीचा हैं गुनीजन हैं
चाँदनी हैं चिकैं हैं चिरागां की माला हैं|
पद्माकर कहैं तहां गजक गिजा हैं सजी,
साज हैं सुरा है औ सुराहीं के प्याला हैं|

रीतिकाल के कवियों ने संस्कृत ग्रंथों का आधार ग्रहण किया-1. भारतमुनि का ‘नाट्यशास्त्र’

2. भामह का ‘काव्यालंकार’ 3. दंडी का ‘ काव्य-दर्श’ 4. जयदेव का चंद्रालोक 5- अप्पय दीक्षित का ‘ कुवलायानंद’ 6. मम्मट का ‘काव्य-प्रकाश’ 7. आनंदवर्धन का ‘ध्वन्यालोक’ 8. विश्वनाथ ‘ साहित्य-दर्पण’

रीतिकाव्य की तीन धाराएं हैं-
1. रीतिबद्ध धारा

- -इस धारा के कवियों ने अलंकार, रस, नायिका-भेद, ध्वनि आदि जैसे संस्कृत काव्यशास्त्र के सिद्धांतों को बताया। उसके लक्षण बताए और फिर उदाहरण देकर काव्य रचे- जैसे-केशवदास, पद्माकर, मतिराम आदि।

2. रीतिसिद्ध धारा-

- इस धारा के कवि अलग से लक्षण-उदाहरण की पद्धति नहीं अपनाते किन्तु रचना में इसका ध्यान अवष्य रखते हैं। जैसे-बिहारी

3. रीतिमुक्त धारा-

- इस धारा के कवि कवि इन लक्षण-उदाहरणों की पद्धति न तो अपनाते हैं और न इनका ध्यान रखते हैं। ये प्रेम के कवि हैं। इसे रीतिमुक्त या स्वच्छंद धारा कहते हैं। इनमें प्रमुख हैं- घनानंद, आलम, बोधा और ठाकुर। इनमें रीतिबद्धता और दरबारीपन के प्रति विद्रोह का भाव है।

मुगल शासन के कारण कई नई चीजें जीवन में आईं या व्याप्त हुईं।

- 1. केन्द्रीय सुदृढ शासन से देश के भीतर तुलनात्मक दृष्टि से शांति का वातावरण बना
- 2. शांति के अवसर पर जीवन में कला और संस्कृति को विशेष महत्व प्राप्त हुआ। शिष्ट और सुसंस्कृत व्यवहार का सम्मान बढ़ा।
- 3. इसी शान्ति और समृद्धि के परिणामस्वरूप कला-प्रेम और विलासिता की भावना भी प्रखरता से जाग्रत हुई
- 4. भाषा साहित्य को राजाओं और सामन्तों का संरक्षण और आश्रय मिला। इन सभी बातों का रीतिकालीन हिन्दी-काव्य पर प्रभाव परिलक्षित हुआ।

रीतिकाव्य पर जो दोष लगाए जाते हैं-

- 1. अश्लीलता
- 2. समाज को प्रगति देने की अक्षमता
- 3. आश्रयदाता की अतिशय प्रशंसा
- 4. चमत्कार-प्रियता
- 5. रूढ़िवादिता